International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 4, April 2018
Website-www.aarf.asia,**Email**:editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सामुदायिक कार्यों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

डॉ. सुनील खुराना[1] श्रीमती प्रतिमा शर्मा[2]
[1] शोध पर्यवेक्षक (पूर्व प्रिंसिपल शिक्षा विभाग, आई. आई. एस. डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी, जयपुर 302020 राजस्थान)
[2] शोधकर्त्री (शिक्षा विभाग, आई. आई. एस. डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी, जयपुर 302020 राजस्थान)

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध कार्य जयपुर जिले के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सामुदायिक कार्य के प्रति अभिवृत्ति पर आधारित है। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। सर्वेक्षण के लिए जयपुर जिले के 1000 शिक्षकों को न्यादर्श हेतु चयनित किया गया है। जिसमें 446 ग्रामीण एवं 554 शहरी क्षेत्र के शिक्षक है। सामुदायिक कार्य के प्रति अभिवृत्ति मापने हेतु शोधकत्री द्वारा स्वनिर्मित सामुदायिक कार्य के प्रति अभिवृत्ति मापनी का निर्माण किया गया है।

परिणामों से ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की तुलना में शहरी क्षेत्र के शिक्षकों की सामुदायिक कार्य के प्रति अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक होती है तथा वहीं आरक्षित जाति के शिक्षकों की सामान्य जाति के शिक्षकों की तुलना में सामुदायिक कार्यों के प्रति अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक होती है। तथा अवैवाहिक शिक्षकों की वैवाहिक शिक्षकों की तुलना में सामुदायिक कार्यों के प्रति अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक होती है।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव की मूलभूत आवश्यकता है। भारतीय समाज में शिक्षा को शरीर, मन व आत्मा के विकास का साधन माना गया है। वहीं शिक्षक को समाज के समग्र व्यक्तित्व के विकास का उत्तरदायित्व सौंपा गया है। शिक्षक अपने उत्तरदायित्व को भली भाँति पूरा करने हेतु सदैव तत्पर रहते है। इसी कारण किसी भी समाज, राष्ट्र या देश की सामाजिक प्रगति एवं विकास में शिक्षक का महत्वपूर्ण योगदान रहता

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

है। इसलिए एक शिक्षक विद्यालय में शिक्षण कार्य के साथ सामुदायिक कार्यों को करने का उत्तरदायित्व वहन करता है।

सामुदायिक कार्य जिन्हें सरकार द्वारा समय–समय पर सरकारी आदेशों के तहत सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों द्वारा पूर्ण करवाये जाते है। निम्न प्रकार से है।

सामुदायिक कार्यः–

i. चुनाव सम्बन्धी समस्त प्रक्रिया – मतदाता सूची तैयार करना, मतदाता सूची जाँच करना, पहचान पत्रों का वितरण, चुनाव सम्पन्न करवाने की प्रक्रिया।

ii. जनगणना कार्य – शिक्षकों द्वारा 10 वर्ष में एक बार जनगणना का कार्य किया जाता है।

iii. विद्यालय में अन्नापूर्ण दुग्ध योजना से सम्बन्धित समस्त रिकॉर्ड सम्बन्धी।

iv. मध्याह्न भोजन योजना

v. ॆक्डब्ए ॆडꣳ की बैठकें आयोजित करना।

vi. भारत साक्षरता अभियान।

vii. स्वच्छता अभियान रैलियाँ आयोजित करना।

viii. आपदा राहत कार्य

ix. चौपाल कार्यक्रमों में नियुक्ति

उपर्युक्त सभी कार्य एक शिक्षक को अपने विद्यालय समय में अध्यापन कार्य के अतिरिक्त विद्यालय से बाहर समुदाय में जाकर करने पड़ते है। इन सामुदायिक कार्यों की प्रकृति एवं संख्या को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि अध्यापकों का बहुत समय सामुदायिक कार्यों को करने में पूरा हो जाता है और वह अपने शिक्षण कार्य को सही समय पर पूरा नहीं कर पाता है। जिसके कारण उसकी इन सामुदायिक कार्यों को करने के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक अभिवृत्ति का विकास होता है। अतः शोधकर्त्री के समक्ष इस विषय पर शोध कार्य करने का विचार मस्तिष्क में उभर कर आया।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययनः–

शोधकर्त्री द्वारा सम्बन्धित साहित्य में शोध विषय से सम्बन्धित पत्र–पत्रिकाएँ, पुस्तकें और विभिन्न शोधग्रन्थों का अध्ययन कर जानकारी प्राप्त की गई तथा पूर्व में किए गए शोधों का समावेश किया गया जिनमें यादव वरूण (2001) गैर शैक्षिक कार्यों का शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव, वत्स सुरभि (2006) शिक्षकों की कार्य कुशलता पर गैर–शैक्षिक गतिविधियों का प्रभाव, (2008) नारंग आर.एच. उत्तर प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों में मध्याह्न भोजन योजना का प्रभाव, गोस्वामी राधाकृष्णन (2009) सामाजिक एवं राष्ट्रीय दायित्वों के निर्वहन का शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशीलता व मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव, वशिष्ठ नीलिमा (2015) प्राथमिक विद्यालयों में संचालित पोषाहार योजना का इस प्रकार देखा गया कि प्रस्तुत

शोध में सीधे सम्बन्धित कोई शोध कार्य अभी तक नहीं हुआ। अतः शोधकर्त्री सरकारी विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की सामुदायिक कार्यों के प्रति अभिवृत्ति में विषय पर शोध कार्य करने का प्रयास किया।

अध्ययन के उद्देश्यः–

i. सरकारी विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की सामुदायिक कार्यों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

ii. सरकारी विद्यालयों में कार्यरत सामान्य व आरक्षित जाति के शिक्षकों की सामुदायिक कार्य के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

iii. सरकारी विद्यालयों में कार्यरत वैवाहिक एवं अवैवाहिक शिक्षकों की सामुदायिक कार्यों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ :–

i. सरकारी विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की सामुदायिक कार्यों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

ii. सरकारी विद्यालयों में कार्यरत सामान्य व आरक्षित जाति के शिक्षकों की सामुदायिक कार्य के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

iii. सरकारी विद्यालयों में कार्यरत वैवाहिक एवं अवैवाहिक शिक्षकों की सामुदायिक कार्यों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

जनसंख्या या समग्र

शोधकर्त्री द्वारा जयपुर जिले के चार शैक्षिक जोन (सांगानेर, झोटवाड़ा, जयपुर पूर्व, जयपुर पश्चिम) के प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों के सरकारी महिला व पुरूष अध्यापकों को लिया गया है।

न्यादर्श

जयपुर जिले के 1000 शिक्षकों को अपने अध्ययन हेतु चुना गया है।

उपकरण

शोधकर्त्री द्वारा सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा किये जाने वाले सामुदायिक कार्यों के प्रति अभिवृत्ति मापने हेतु स्वनिर्मित उपकरणों का निर्माण किया है।

सामुदायिक कार्य के प्रति अभिवृत्ति मापनी जिसमें 60 कथनों का निर्माण किया गया तथा जिसमें शिक्षकों के विभिन्न कारकों (वेतन और सुविधाएँ, निरीक्षण कार्य, पदोन्नति कार्यभार, सामाजिक सम्बन्ध) के आधार पर देखा गया परीक्षण की विश्वसनीयता का मान कार्ल पीयरसन गुणांक द्वारा 0.85 प्राप्त किया गया।

सांख्यिकी – अध्ययन में प्रयुक्त परिणामों का अध्ययन, मध्यमान, प्रमाप विचलन व ज.जमेज द्वारा प्राप्त किया गया।

अध्ययन की परिसीमाएँ –

1. प्रस्तुत अध्ययन जयपुर जिले तक ही सीमित है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में सरकारी विद्यालय के 1000 शिक्षकों को लिया गया है।
3. सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा किये जाने वाले सामुदायिक कार्यों का सम्बन्ध उनकी व्यावसायिक संतुष्टि से ही देखा गया है।

अध्ययन की विश्लेषण एवं व्याख्याः

परिकल्पना 1.1

सरकारी विद्यालय में कार्यरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों की सामुदायिक कार्य के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

सारणी संख्या 1.1

शिक्षक		मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मान (t)
	N	M	SD	
ग्रामीण	446	183.24	38.24	5.4954
शहरी	554	197.24	42.18	

स्वतंत्रता की कोटि ;कण्द्धित्र;446़554द्ध दृ 2 त्र 998

0.05 सार्थकता स्तर पर ज मान त्र 1ण्96

0.01 सार्थकता स्तर पर ज का मान त्र 2ण्58

उपरोक्त सारिणी संख्या 1.1 में प्रदर्शित संमको के आधार पर शोधकर्त्री ने यह परिणाम ज्ञात किया है कि प्रस्तुत सारिणी में ज का मान 5.4954 प्राप्त हुआ है। जबकि स्वतन्त्रता की कोटि के अंश 998 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर ज का अपेक्षित मान 1.96 है। तथा 0.01 सार्थकता स्तर के लिए अपेक्षित मान 2.58 है। प्राप्त मान अपेक्षित मान से अधिक है। **अतः शुन्य परिकल्पना संख्या 1.1 ''सरकारी विद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण व शहरी शिक्षकों की सामुदायिक कार्य के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नही होता।'' अस्वीकृत होती है।**

© Associated Asia Research Foundation (AARF)

परिकल्पना 1.2

सरकारी विद्यालयों में कार्यरत सामान्य जाति के शिक्षकों एवं आरक्षित जाति के शिक्षकों की सामुदायिक कार्यों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।

सारणी संख्या 1.2

शिक्षक		मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मान (t)
	N	M	SD	
सामान्य जाति शिक्षक	488	164.83	12.64	12.4489
आरक्षित शिक्षक	512	178.21	19.43	

स्वतंत्रता की कोटि ;कण्द्वित्र;488़512द्व . 2त्र998

0.05 सार्थकता स्तर पर ज का मान त्र 1ण्96

0.01 सार्थकता स्तर पर ज का मान त्र 2ण्58

उपरोक्त सारिणी संख्या 1.2 में प्रदर्शित संमको के आधार पर शोधकर्त्री ने यह परिणाम ज्ञात किया है कि प्रस्तुत सारिणी में ज का मान 12.44 प्राप्त हुआ है। जबकि स्वतन्त्रता की कोटि के अंश 998 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर ज का अपेक्षित मान 1.96 है। तथा 0.01 सार्थकता स्तर के लिए अपेक्षित मान 2.58 है। प्राप्त मान अपेक्षित मान से अधिक है। **अतः शुन्य परिकल्पना संख्या 1.2 सरकारी विद्यालयों में कार्यरत सामान्य जाति के शिक्षकों एवं आरक्षित जाति के शिक्षकों की सामुदायिक कार्यों के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता, अस्वीकृत होती है।**

परिकल्पना 1.3

सरकारी विद्यालयों में कार्यरत वैवाहिक एवं अवैवाहिक शिक्षकों की सामुदायिक कार्य के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।

सारणी संख्या 1.3

शिक्षक		मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मान (t)
	N	**M**	**SD**	
वैवाहिक शिक्षक	**568**	**164.83**	**12.64**	**12.4489**
अवैवाहिक शिक्षक	**432**	**178.21**	**19.43**	

स्वतंत्रता की कोटि ;कण्द्धित्र;568़432द्ध . 2त्र998

0.05 सार्थकता स्तर पर ज मान त्र 1ण्96

0.01 सार्थकता स्तर पर ज का मान त्र 2ण्58

उपरोक्त सारिणी संख्या 1.3 में प्रदर्शित संमको के आधार पर शोधकर्त्री ने यह परिणाम ज्ञात किया है कि प्रस्तुत सारिणी में ज का मान 12.44 प्राप्त हुआ है। जबकि स्वतन्त्रता की कोटि के अंश 998 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर ज का अपेक्षित मान 1.96 है। तथा 0.01 सार्थकता स्तर के लिए अपेक्षित मान 2.58 है। प्राप्त मान अपेक्षित मान से अधिक है। **अतः शुन्य परिकल्पना संख्या 1.3 सरकारी विद्यालयों में कार्यरत वैवाहिक एवं अवैवाहिक शिक्षकों की सामुदायिक कार्य के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता। अस्वीकृत होती है।**

अध्ययन के निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए है।

1. तालिका संख्या 1.1 में प्रदर्शित मध्यमान शिक्षकों के शहरी समूह का ग्रामीण समूह की अपेक्षा अधिक है। अतः प्रदर्शित होता है कि शहरी क्षेत्र के शिक्षकों की ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की तुलना में सामुदायिक कार्यों के प्रति अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक होती है।
2. तालिका संख्या 1.2 में प्रदर्शित मध्यमान आरक्षित जाति के शिक्षकों का सामान्य जाति के शिक्षकों की तुलना में अधिक होता है। अतः आरक्षित जाति के शिक्षकों की सामान्य जाति के शिक्षकों की अपेक्षा सामुदायिक कार्यों के प्रति अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक पाई जाती है।
3. तालिका संख्या 1.3 में प्रदर्शित मध्यमान अवैवाहिक शिक्षकों का वैवाहिक शिक्षकों की तुलना में अधिक पाया जाता है। अतः अवैवाहिक शिक्षकों की वैवाहिक शिक्षकों की तुलना में सामुदायिक कार्यों के प्रति अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक पाई जाती है।

शोध के शैक्षिक निहितार्थ –

1. सरकार द्वारा शिक्षकों को सामुदायिक कार्यों से मुक्त रखा जाये तो विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं व विद्यालय अनुशासन पर सकारात्मक प्रभाव देखने को मिलता है।
2. प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्षों का शैक्षिक अनुप्रयोग कर सरकार द्वारा इस क्षेत्र में आने वाली समस्याओं को दूर करने में सहायक होगा।
3. प्रस्तुत शोध से यह मार्गदर्शन प्राप्त होता है कि सरकार द्वारा सामुदायिक कार्यों की सूची सीमित कर दी जाए तो शिक्षकों की कमी से विद्यालय संगठन पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव को कम किया जा सकता है।

4. प्रस्तुत शोध शिक्षकों द्वारा किये जाने वाले सामुदायिक दायित्वों को पूरा करने में शिक्षकों की भूमिका को समझाने में सहायक होगा।
5. प्रस्तुत शोध का शिक्षकों को शिक्षण कार्य के साथ सामुदायिक कार्यों को समय पर पूर्ण करने की प्राथमिकता के आधार पर किसी व्यक्ति के व्यवसाय चयन में महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. अग्रवाल, बी.एल. सांख्यिकी के सिद्धान्त और अनुप्रयोग, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1995
2. आहुजा, आर. (2006) रिसर्च मैथ्ड, न्यू दिल्ली : रावत पब्लिकेशन।
3. गिलफोर्ड, जे. पी. (1956) : साइकोमेट्रिक मेथ्ड मेकग्राहिल बुक कम्पनी न्यूयॉर्क।
4. गुप्ता, ए. (2014) डवलपमेंट ऑफ एलीमेंटरी एजुकेशन इन इण्डिया – ईश्यूज एण्ड चैलेंजेज, राइट टू एजुकेशन पॉलिशी एण्ड पर्सपेक्टिव ए. पी. एच. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, नई दिल्ली।
5. गुड़ सी. वी. (1966) असेन्शियल ऑफ एजुकेशन रिसर्च मेथोडोलॉजी एण्ड डिजाईन, न्यूयॉर्क : मेरीडिथ पब्लिशिंग कम्पनी।
6. चौहान, एस. एस (1992) एडवांस एजुकेशन साइकोलॉजी, विकास पब्लिशिंग हाउस न्यू दिल्ली।
7. जॉन, डब्ल्यू बेस्ट (2000) : रिसर्च इन एजुकेश, ऑरियन्टल हॉल ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली।
8. जैन, डॉ. बी. एम. (1972) : ''शोध प्रविधि एवं क्षेत्रीय तकनीकी'' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
9. टोढियाल एण्ड पाठक (2006) : रिसर्च इन एजुकेशन नई दिल्ली : प्रिन्टर्स हॉल ऑफ इण्डिया प्रा. लि.।
10. डी. एन. श्रीवास्तव : सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान साहित्य प्रकाशन, आगरा।
11. भटनागर सुरेश, सक्सेना (2006) अनामिका, डवलपमेंट ऑफ एजुकेशन इन इण्डिया, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।
12. मुखर्जी, एस. एन (1968) : एजुकेशन ऑफ टीचर्स इन इण्डिया वॉल्यूम–1, एस. चन्द एण्ड कम्पनी न्यू दिल्ली।
13. राय, पारसनाथ एवं भटनागर चांद (1974) अनुसंधान परिचय, आगरा लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, द्वितीय संस्करण।